DSSSB TGT & PGT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
भाषाओं का वर्गीकरण
Part -2
LIVE 23-04-2024 05:00 PM

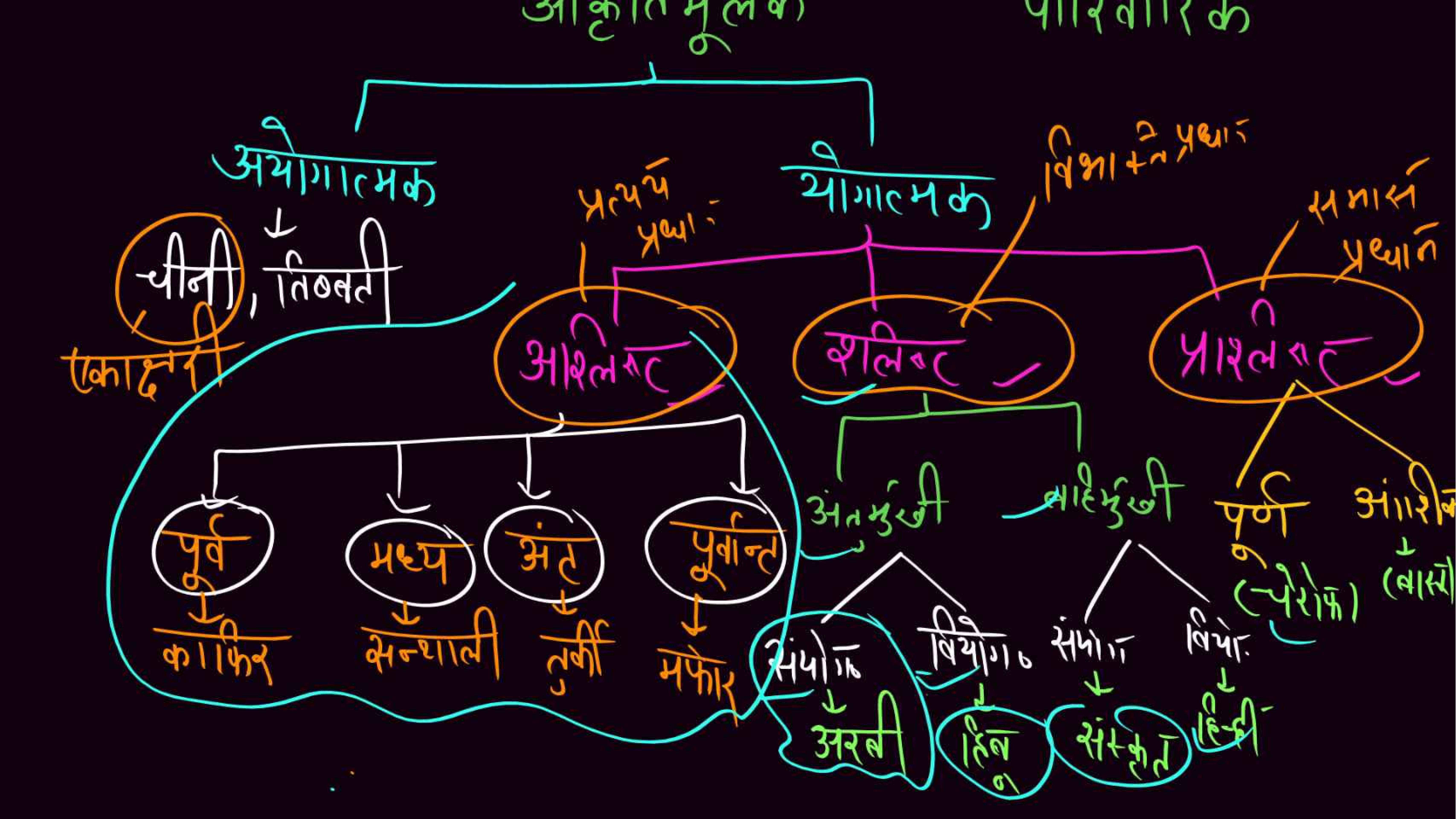

आकृति मूलक
पारिवारिक
अयोगात्मक
चीनी, तिब्बती
एकाक्षरी
योगात्मक
प्रत्यय प्रधान
विभक्ति प्रधान
समास प्रधान
अश्लिष्ट
श्लिष्ट
प्रश्लिष्ट
पूर्व
मध्य
अंत
पूर्वान्त
काफिर
सन्थाली
तुर्की
मफोर
अंतर्मुखी
बहिर्मुखी
संयोगा.
वियोगा.
संयोगा.
वियोगा.
अरबी
हिब्रू
संस्कृत
हिन्दी
पूर्ण
आंशिक
(चेरोकी)
(बास्क)

१. अयोगात्मक भाषाएँ (Isolating or Root Languages)

अयोगात्मक उन भाषाओं को कहते हैं, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का संयोग नहीं होता है। प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है। प्रत्येक शब्द की स्वतन्त्र या अलग सत्ता होने से इसे Isolating (पृथक्-पृथक्) कहते हैं। इसमें प्रत्येक शब्द प्रकृति या मूल के तुल्य होता है, अतः इसे Root (धातु, मूल) Language कहते हैं। इन भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय जैसी चीज नहीं होती।

२. योगात्मक भाषाएँ (Agglutinative Languages) — योगात्मक भाषाएँ उनको कहते हैं, जिनमें प्रकृति और प्रत्यय या अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का संयोग रहता है। प्रकृति (अर्थतत्त्व) और प्रत्यय (सम्बन्धतत्त्व) का संयोग विभिन्न प्रकार से हो सकता है, अतः योगात्मक भाषाओं को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है-

(क) अश्लिष्ट (प्रत्यय-प्रधान) भाषाएँ (Agglutinative languages)

(ख) श्लिष्ट (विभक्ति-प्रधान) भाषाएँ (Inflectional languages)

(ग) प्रश्लिष्ट (समास-प्रधान) भाषाएँ (Incorporative languages)

(क) अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ — अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय इस प्रकार जुड़ा हुआ होता है कि दोनों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। प्रकार के जोड़ को 'तिल-तण्डुल - न्याय' (तिल और चावल की तरह) कह सकते हैं। इसके चार भाग किए गए हैं-

१. **पूर्वयोगात्मक** (जहाँ प्रत्यय या सम्बन्धतत्त्व प्रकृति से पहले लगता है)

२. **मध्ययोगात्मक** (जहाँ प्रत्यय प्रकृति के बीच में जोड़ा जाता है)

३. **अन्तयोगात्मक** (जहाँ प्रत्यय प्रकृति के अन्त में जोड़ा जाता है)

४. **पूर्वान्त योगात्मक** (जहाँ प्रत्यय प्रकृति के पहले और अन्त में जुड़ता है)

(ख) श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ – श्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति और प्रत्यय घनिष्ठता से मिले होते हैं। दोनों इस प्रकार मिले होते हैं कि प्रकृति और प्रत्यय को अलग-अलग बताना संभव नहीं होता है। प्रत्यय की झलक अवश्य रहती है। ऐसे संयोग को 'नीर-क्षीर-न्याय' (दूध-पानी की तरह मिलना) कह सकते हैं । प्रकृति और प्रत्यय के घनिष्ठता से मिलने से प्रकृति (अर्थतत्त्व) में कुछ परिवर्तन भी दृष्टिगोचर होते हैं। इसके दो भाग किए गए हैं और उनमें भी प्रत्येक के दो-दो भाग हैं-

(१) अन्तर्मुखी श्लिष्ट — इसमें प्रत्यय (सम्बन्धतत्त्व) प्रकृति (अर्थतत्त्व) के बीच में घुलमिल कर रम जाते हैं । इसके दो भेद हैं-

(क) संयोगात्मक (Synthetic) — जिनमें शब्दों में अलग से सहायक सम्बन्धतत्त्व लगाने की आवश्यकता नहीं होती है।

(ख) वियोगात्मक (Analytic)- जिनमें शब्दों में अलग से सहायक सम्बन्धतत्त्व लगाए जाते हैं ।

(२) बहिर्मुखी श्लिष्ट — इसमें प्रत्यय (सम्बन्धतत्त्व) प्रकृति (अर्थतत्त्व) के बाद में या अन्त में लगते हैं । भारोपीय भाषाएँ संस्कृत आदि इसी कोटि में आती हैं। इसके भी दो भेद हैं-

(क) संयोगात्मक — जिसमें सम्बन्धतत्त्व प्रकृति (अर्थतत्त्व) के साथ जुड़ा होता है । जैसे—संस्कृत के सुप् तिङ् आदि ।

(ख) वियोगात्मक – जिसमें सम्बन्धतत्त्व प्रकृति से अलग लगाया जाता जैसे—हिन्दी आदि में कारक - चिह्न, सहायक क्रिया आदि

(ग) प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ – प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रकृति अर्थतत्त्व और प्रत्यय (सम्बन्धतत्त्व) इतने अधिक घनिष्ठ रूप में मिले होते हैं कि दोनों को न अलग पहचाना जा सकता है और न दोनों को एक-दूसरे से अलग ही किया जा सकता है। इस संयोग को 'दधि घृत-न्याय' (दही में घी की तरह मिले हुए) कह सकते हैं। इसके दो भेद किए गए हैं-

(१) पूर्ण प्रश्लिष्ट योगात्मक — इसमें अर्थतत्त्व और सम्बन्धतत्त्व का इतना अधिक घनिष्ठ मेल हो जाता है कि पूरे वाक्य का प्रायः एक शब्द बन जाता है। वह एक शब्द पूरे वाक्य का अर्थ देता है। इसमें आने वाले शब्दों का कुछ-कुछ अंश लेकर एक ऐसा शब्द बना दिया जाता है, जिसमें सभी शब्दों का थोड़ा प्रतिनिधित्व रहता है। यह शब्द वाक्य के तुल्य व्यवहृत होता है । इसे 'पूर्ण समास प्रधान' भी कहते हैं।

(२) आंशिक प्रश्लिष्ट योगात्मक - इसमें सर्वनाम और क्रिया इस प्रकार मिल जाती है कि क्रिया का स्वरूप नगण्य हो जाता है और वह सर्वनाम की पूरक हो जाती है। इसमें वाक्य के सभी अवयव संज्ञा, विशेषण आदि भी सम्मिलित नहीं होते, इसलिए इसे 'आंशिक प्रश्लिष्ट योगात्मक' कहते हैं। इसे 'अंशतः समास-प्रधान' भी कहते हैं।

इस प्रकार आकृतिमूलक वर्गीकरण को चार वर्गों में प्रस्तुत किया जाता है-

(१) अयोगात्मक (स्वतन्त्र शब्दात्मक) भाषाएँ (Isolating languages

(२) अश्लिष्ट योगात्मक (प्रत्यय-प्रधान) भाषाएँ (Agglutinative language

(३) श्लिष्ट योगात्मक (विभक्ति - प्रधान) भाषाएँ (Inflectional language

(४) प्रश्लिष्ट योगात्मक (समास - प्रधान) भाषाएँ (Incorporative languages)

अयोगात्मक भाषाएँ (Isolating Languages)

- ✓ अयोगात्मक भाषा उसको कहते हैं, जिसमें अर्थतत्त्व (प्रकृति) और (प्रत्यय) का कोई संयोग नहीं होता है।
- ✓ इसमें प्रत्येक शब्द स्वतन्त्र होता है । शब्द-स्वातन्त्र्य के कारण इन्हें Root (धातु, मूल) Languages भी कहते हैं ।
- ✓ 'अयोग' का अर्थ है- अ-नहीं, योग-मिलना, जुड़ना, अर्थात् जिस भाषा में प्रकृति - प्रत्यय आदि का कोई मेल न हो।
- ✓ ये भाषाएँ 'स्थान - प्रधान' हैं। भाषा में कर्ता, क्रिया, कर्म आदि का स्थान निश्चित होता है। एक ही शब्द स्थान -भेद से कर्ता, क्रिया या कर्म हो सकता है। इसको Positional (स्थान - प्रधान), Inorganic (निरवयव) भी कहा जाता है।

(क) अयोगात्मक वर्ग की भाषाएँ-

इस वर्ग की मुख्य प्रतिनिधि भाषा 'चीनी' है।

- ✓ स्यामी
- ✓ तिब्बती
- ✓ बर्मी
- ✓ अनामी

सूडानी (अफ्रीका के सूडान देश की भाषा) आदि भाषाएँ इस वर्ग में हैं।

(ख) अयोगात्मक भाषाओं की विशेषताएँ-

- इन भाषाओं का व्याकरण नहीं होता ।
- 'शब्दक्रम' या 'पदक्रम' का विशेष महत्त्व होता है।
- स्वर (सुर, Tone, लहजा) के भेद से अर्थ-भेद हो जाता है।
- निपात (Particle, सम्बन्धसूचक अव्यय) से भी शब्द - रचना
- और वाक्य - रचना में सहायता ली जाती है।
- शब्दों में परिवर्तन नहीं होता। सम्बन्धतत्त्व लगने पर अन्तर नहीं आता
- सम्बन्धतत्त्व का बोध सम्बन्धतत्त्व- बोधक शब्दों को लगाकर या स्थान- विशेष पर रखकर कराया जाता है।

(ग) अयोगात्मक भाषाओं की निजी विशेषताएँ-

(१) चीनी भाषा - स्थान और स्वर- प्रधान ।

(२) सूडानी— स्थान - प्रधान

(३) अनामी - स्वर - प्रधान ।

(४) बर्मी, स्यामी, तिब्बती — निपात - प्रधान

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

(घ) शब्द - निर्माण एवं वाक्य-रचना-

शब्द + सम्बन्धतत्त्व लगाकर वचन, कारक आदि बताए जाते हैं। धातु + भूतकाल आदि के सूचक सम्बन्धतत्त्व लगाकर भूतकाल आदि अर्थ बताया वाक्य में सामान्य पद-क्रम है— कर्ता, क्रिया, कर्म । विशेषण कर्ता से पूर्व लगते हैं । विशेषण कर्ता के बाद रखने पर विधेय (Predicate) का काम करते हैं । जैसे वो (Wo, मैं), नीं (Ni, तू), था (Ta, वह), ति (Ti, षष्ठी, सम्बन्ध - कारक), मेन (Men, बहुवचन) ।

वो (मैं)
वो - मेन (हम)
वो – ति (मेरा)
वो – मेन – ति (हमारा)
नी (तू)
नी – मेन (तुम)
ति (हमारा)

नी – ति (तेरा)
नी-मेन-ति (तुम्हारा)
था (वह)
था-मेन (वे)
था -ति (उसका)
था -मेन-ति (उनका)

इड् - को - जेन (भारतीय व्यक्ति, इड्-इण्डिया, को- देश, जेन-आदमी)

मे-को-जेन (अमेरिकन, मे-अमेरिका, को- देश, जेन-आदमी)

श्येन शेंग कुई शिंग = श्रीमन्, आपका क्या शुभ नाम है? (श्येन शेंग कुई = शुभ, शिंग = नाम, वंशनाम)

वो शिंग ली = मेरा नाम ली है। (वो - मैं)

चिंग त्सो, चिंग त्सो = कृपया पधारिए। (चिंग = कृपया, त्यो = बैठना)

ली श्येन शेंग हाओ या = श्रीमन् ली, आप कैसे हैं? (हाओ या = कुशल तो हैं, कैसे हैं ।)

ली श्येन शेंग लाई ला = श्रीमान् ली, आ गए। (लाई = आना, ला = भूतकाल)

(ङ) स्थानभेद से अर्थ-भेद-

१. ता - जेन (बड़ा आदमी; ता -बड़ा, जेन - आदमी)

जेन - ता (आदमी बड़ा है)

२. वो - ता- नी (मैं मारता हूँ तुझे; वो- मैं, ता - मारना, नी-तृ)

नी-ता- वो (तू मारता है मुझे)

हिन्दी, अंग्रेजी में प्रश्नवाचक पहले लगता है, परन्तु चीनी में प्रश्नवाचक अन्त में लगता है।

वाङ् श्येन शेंग त्साई ज्या मा = क्या श्रीमान् वाङ् घर पर हैं?

(श्येन शेंग = श्रीमान्, त्साई = हैं, रह रहे हैं, ज्या- घर, मा- क्या

अश्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ (Agglutinative Languages)

अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं को Agglutinative languages कहते हैं । यह शब्द लैटिन के Gluten (ग्लुटेन, चूना), Glutinare (ग्लुटिनेयर, चूने से जोड़ना या चिपकाना) शब्द से बना है। इस शब्द से इस प्रकार की भाषाओं की स्थिति का ज्ञान होता है। जैसे– चूने से ईंटों को जोड़ा जाता है और ईंटें साफ दिखाई पड़ती हैं, उसी प्रकार अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में अर्थतत्त्व (प्रकृति) और सम्बन्धतत्त्व (प्रत्यय) इस प्रकार जुड़े रहते हैं कि इनको स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इस प्रकार के जोड़ (योग) को पूर्णतया न जुड़े होने से

'अश्लिष्ट' और जुड़े होने के कारण योगात्मक' कहा जाता है। इस जोड़ को 'तिल-तण्डुल - न्याय' (तिल-चावल के तुल्य) कहा जा सकता है। जैसे- संस्कृत और हिन्दी में - मृदुता – मृदु + ता, मनुष्यत्व — मनुष्य + त्व, सर्वत्र - सर्व + त्र, तूने - तू + ने, होगा - हो + गा, जाऊँगा — जा + ऊँ + गा ।

तुर्की (Turkish) भाषा इस वर्ग की प्रतिनिधि भाषा है। शब्द और प्रत्यय को ईंटों की तरह जमाते चले जाइये। कर्म, करण आदि के बोधक प्रत्यय एकवचन और बहुवचन में एक ही होते हैं । बहुवचन सूचित करने के लिए अलग शब्द हैं। कहीं-कहीं पर प्रत्यय लगने पर

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

प्रकृति (अर्थतत्त्व) में कुछ ध्वनि - परिवर्तन भी होता है, पर वह नगण्य है। जैसे – Ev (एव, घर), Ler (लेर, बहुवचन - सूचक) के रूप-

	एकवचन	बहुवचन	
कर्ता – Ev	(एव, घर)	Ev-ler	(एव्-लेर्)
कर्म – Ev-i	(एव्-इ, घर को)	Ev – ler -i	(एव्-लेर्-इ
संप्रदान – Ev – e	(एव्-ए, घर के लिए)	Ev-ler-i	एव्-लेर्-ए

अपादान-Ev-den	(एव्-डेन, घर से	Ev-ler-den	(एव्-लेर्-इन)
सम्बन्ध-Ev-in	(एव्-इन, घर का)	Ev-ler-in	(एव्-लेर्-इन)
अधिकरण-Ev-de	(एव्-डे, घर में)	Ev-ler-de	(एव्-लेर्-डे)

विभक्तियों का क्रम स्मरण रखने के लिए - x, इ, ए, डेन, इन, डे' सूत्र याद कर लेना पर्याप्त है। बहुवचन में ler (लेर) लगेगा। यहाँ एव् में ए है, इसलिए ler (लेर) में e (ए) लगा । यदि शब्द में a (आ) होगा तो बहुवचन में lar (लार) में a लगेगा। कुछ अन्य उदाहरण ये हैं

El— (एल्, हाथ), El-im (एल्-इम, मेरा हाथ)

El-im-de (एल् - इम् - डे, मेरे साथ में)

इस प्रकार की भाषाएँ हंगेरियन (Hungarian) और फिनिश (Finish) भी हैं। अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में प्रत्यय या सम्बन्धतत्त्व कहीं अर्थतत्त्व (प्रकृति) से पहले लगता है, कहीं मध्य में, कहीं अन्त में और कहीं आगे-पीछे दोनों ओर। इसी आधार पर इनके चार भाग किए गए हैं — पूर्वयोगात्मक, मध्ययोगात्मक, अन्तयोगात्मक, पूर्वान्तयोगात्मक। इनके उदाहरण इस प्रकार हैं-

(क) पूर्व-योगात्मक (Prefix-agglutinative) — इसमें सम्बन्धतत्त्व या प्रत्यय शब्द से पूर्व लगता है। बांटू परिवार की काफिर और जुलू भाषाओं में इसके उदाहरण मिलते हैं— काफिर भाषा में —ति (हम), नि (वे, उन), कु (संप्रदान का चिह्न) । 'कु' पहले लगेगा-

कु+ति = हमको, कु + नि = उनको

जुलू भाषा में —'न्तु' (आदमी)। सम्बन्धतत्त्व- उमु (एकवचन), अब बहुवचन) पहले लगेंगे।

उमु + न्तु = एक आदमी, अब + न्तु = बहुत आदमी

जैसे अंग्रेजी में कहते हैं – To me — मुझको, With me—मेरे साथ, For him — उसके लिए

(ख) मध्य-योगात्मक (Infix-agglutinative) इसमें सम्बन्धतत्त्व शब्द के बीच में जुड़ता है। ऐसी भाषाएँ भारत में मुंडा - परिवार की 'सन्थाली' तथा हिन्द महासागर से अफ्रीका तक फैले हुए द्वीपों की भाषाएँ हैं । ये प्रायः दो अक्षरों वाली हैं। प्रत्यय या सम्बन्धतत्त्व दोनों अक्षरों के बीच में लगता है। जैसे— सन्थाली भाषा में मंझि (मुखिया)। प (बहुवचन - चिह्न), बीच में जुड़ेगा।

मंझि = मुखिया

मंपझि = मुखिये

इसी प्रकार — दल (मारना), प (परस्पर) बीच में लगेगा ।

दल = मारना, दपल = एक-दूसरे को मारना ।

(ग) अन्त-योगात्मक (Suffix-agglutinative) — इसमें सम्बन्धतत्त्व (प्रत्यय) अन्त में जुड़ते हैं। ऊपर तुर्की भाषा के दिए गए उदाहरण इसके ही उदाहरण हैं। भारत की द्रविड़ परिवार की तेलुगु, तमिल, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं में भी कारक - चिह्न अन्त में जुड़ते हैं। कन्नड़ में 'सेवक' शब्द के रूप निम्न प्रकार से चलेंगे। एक० में प्रत्यय में 'न' है, बहु० में न के स्थान पर 'र' ।

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	सेवक-नु	सेवक-रु
कर्म	सेवक-नन्नु	सेवक – रन्नु

करण	सेवक-निद	सेवक-रिंद
संप्रदान	सेवक-निगे	सेवक-रिगे
सम्बन्ध	सेवक-न	सेवक-र
अधिकरण	सेवक-नल्लि	सेवक-रल्लि

तेलगु आदि में 'वृक्ष' वाचक 'गुर्रम' और 'मर' के रूप एक० में। में।

कारक	तेलुगु	तमिल	मलयालम	कन्नड़
कर्ता	गुर्रम्	मरम्	मरम्	मरम्
कर्म	गुर्रम्	मरम्	मरम्	मरमम्
संप्रदान	गुर्रम् उनकु	मर त्तिर्कु	मर त्तिन्नु	मर के
सम्बन्ध	गुर्रम् उ	मर त्तिन	मर त्तिन्द्रे	मर दा

(घ) पूर्वान्त योगात्मक (Prefix-suffix-agglutinative) – इस वर्ग की भाषाओं में सम्बन्ध-तत्त्व शब्द के पहले और बाद में दोनों ओर लगता है। जैसे—फ्रेंच में

निषेधार्थक Ne...pas (न .. पा) निषेध्य के पहले और बाद में लगता है। जैसे- Donnez-m-en (दोने माँ, मुझे कुछ दो), निषेधार्थक —— Ne men donnez pas (न माँ दोने पा, मुझे कुछ मत दो) । न्यूगिनी की 'मफोर' भाषा में इसके उदाहरण मिलते हैं।

म्रफ = सुनना, ज = मैं, उ = तू, तुझे। ज-म्रफ - उ = मैं सुनता हूँ तुझे (मैं तेरी बात सुनता हूँ)। इसमें ज (मैं) पहले जुड़ा और उ (तुझे) अन्त में जुड़ा ।

श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ (Inflectional Languages)

श्लिष्ट-योगात्मक भाषाओं में अर्थतत्त्व (प्रकृति) और सम्बन्धतत्त्व (प्रत्यय) घनिष्ठता से मिले होते हैं। दोनों को स्पष्ट रूप से अलग-अलग देखा जा सकता है। अर्थतत्त्व में प्रत्यय के मिलने से कुछ विकार भी आ जाता है, परन्तु प्रत्यय को पहचाना जा सकता है। यह संयोग 'नीर-क्षीर-न्याय' (दूध- पानी - संयोग) कहा जा सकता है। अर्थतत्त्व में विकार के उदाहरण हैं- कृ + अन = करण, कृ + तव्य = कर्तव्य, भूत + इक = भौतिक, वेद + इक = वैदिक। अरबी में 'स-ल-म' से सलाम, सलीम, इस्लाम, मुस्लिम आदि । इन भाषाओं में Inflection

(शब्द-रूप, धातुरूप) की प्रधानता होती है, अतः इन्हें _Inflectional (विभक्ति - प्रधान) भाषाएँ कहते हैं।

इस वर्ग में भारोपीय भाषाएँ, सेमेटिक (सामी) और हैमेटिक (हामी) भाषाएँ आती हैं। इस वर्ग की भाषाएँ संसार में सबसे अधिक उन्नत हैं। संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, रूसी, अवेस्ता, अंग्रेजी, हिन्दी आदि सभी इसी वर्ग में आती है।

इस वर्ग की भाषाओं के दो भेद किए जाते हैं – (क) अन्तर्मुखी, (ख) बहिर्मुखी । इन दोनों के भी दो भेद किए जाते हैं –

१. संयोगात्मक,

२ . वियोगात्मक ।

अन्तर्मुखी और बहिर्मुखी विभाजन पर बहुत मतभेद है । अन्तर्मुखी में अरबी और बहिर्मुखी में संस्कृत प्रतिनिधि भाषा हैं। संस्कृत में भी शब्दों के अन्दर परिवर्तन होता है, जैसे - दैविक, नैतिक, पपाठ, जगाम, ममार आदि, अतः कुछ विद्वान् इस विभाजन को उचित नहीं समझते हैं। यदि विचारपूर्वक देखा जाए तो अरबी और संस्कृत के

शब्द- निर्माण में कुछ मौलिक अन्तर है। अरबी में क्रिया के बीच में सम्बन्ध-तत्त्वों को जोड़ा जाता है, संस्कृत में सम्बन्ध तत्त्वों को अन्त में जोड़ा जाता है । सम्बन्ध तत्त्वों के कारण संस्कृत में स्वर- परिवर्तन (गुण, वृद्धि आदि) होते हैं, परन्तु ये अरबी के तुल्य जोड़े नहीं जाते हैं। सम्बन्धतत्त्व सुप्, तिङ् कृत्, तद्धित प्रत्यय आदि अन्त में ही जुड़ते हैं। अतः दोनों भाषाओं की प्रकृति में अन्तर होने के कारण तथा सुविधा के लिए ये भेद व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगी हैं।

(क) अन्तर्मुखी श्लिष्ट (Internal Inflectional) – इस वर्ग की भाषाओं में अर्थतत्त्व के बीच में सम्बन्धतत्त्व जुड़ते हैं। ये सम्बन्धतत्त्व अर्थतत्त्व में दूध- पानी की तरह घुलमिल जाते हैं। इनसे विभिन्न अर्थों का बोध होता है। सेमेटिक और हैमेटिक परिवार की भाषाएँ इस वर्ग में आती हैं। अरबी इस वर्ग की प्रतिनिधि भाषा है। अरबी भाषा में धातुएँ प्रायः तीन व्यंजनों वाली होती हैं। सम्बन्धतत्त्व प्रायः स्वर के रूप में होते हैं। कुछ स्थानों पर वर्ण (म, मु, य आदि) भी लगते हैं। उदाहरण के लिए अरबी की KTB (क त ब, लिखना) धातु दी जा रही है-

(१) 'क-त-ब' से किताब (लिखी गई पुस्तक), कुतुब (पुस्तकें), (लिखने वाला), मकतब (स्कूल, लिखना सिखाने का स्थान), मकातिब (स्कूल का बहु०), कुतुबा (लेख), मकतूब (लिखित), मकतूबात (लिखित का बहुवचन), किताबत (लिखना) ।

कुछ अन्य उदाहरण ये हैं

(२) 'क-त-ल' (मारना) – कत्ल (मारना), कातिल (मारने वाला), कातिला (मारने वाली), मकतल (मारने की जगह), किताल (युद्ध), मकतूल (मरने वाला) कतील (जिसे मारा गया) ।